कितनी हैं

(कहानी संग्रह)

धर्मेन्द्र राजमंगल

Rajmangal Publishers

www.rajmangalpublishers.org

Copyright © Dharmendra Rajmangal 2018

All Right Riserved

This is a work of fiction. Names, characters, businesses, places, events, locales, and incidents are either the products of the author's imagination or used in a fictitious manner. Any resemblance to actual persons, living or dead, or actual events is purely coincidental.This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser. Under no circumstances may any part of this book be photocopied for resale.

The printer/publishers, distributer of this book are not in any way responsible for the view expressed by author in this book. All disputes are subject to arbitration, legal action if any are subject to the jurisdiction of courts of Aligarh uttar pradesh.

First Published in Feb 2018

by

Rajmangal Publishers

Aligarh (UP) India. Ph.No. +91– 7017993445

www.rajmangalpublishers.org

rajmangalpublishers@gmail.com

ISBN : 978-81-936906-9-7

Cover Design by : Dharmendra

Table of Contents

1. Copyright 2
2. भूमिका..... 5
3. भागी हुई लडकी..... 6
4. खुजली की दवा.....14
5. बहादुर मौसा जी.....20
6. गहने चोर.....29
7. नाम निकाला.....38
8. असली गहने.....44
9. सगुन के पैसे.....50
10. चोर भागो यन्त्र.....59
11. आंधी की आग.....64
12. भांग का भूत.....69
13. चार सौ बीसी.....75
14. कलंकी 81
15. कजरी 90
16. मौत की झांकी.....94
17. घासलेट का घी 100
18. काली गाय.....106
19. ज्वाला की अग्निपरीक्षा.....113

20. सुन्दरी..... 119
21. दिल्ली की जमुना 123
22. मुआवजा..... 130
23. आत्मागमन..... 134
24. जुआरी की मौत..... 140
25. कातिल की मौत 145
26. लावारिश लाशें 150
27. विदाई..... 155

भूमिका

ये है मेरा कहानी संग्रह -कितनी हैं-. इस संग्रह है पच्चीस कहानियां हैं, जो मेरे शुरूआती नौसिखिया लेखन की निशानी हैं. इन पच्चीस कहानियों में आपको हर तरह की कहानी मिलेगी. जिसमें आप ख़ुश होएँगे. थोडा रोयेंगे. हसेंगे भी खूब. सोचने पर मजबूर भी हो जायेंगे. एकाध कहानी आपको किसी की याद भी दिला देगी.

और एक बात और. आपको इन कहानियों में कुछ कमी भी नजर आएगी. तो कृपया नाराज़ न होना. क्योंकि ये मेरी शुरूआती कहानी है. जिनमें अपरिपक्वता भरी हुई है. मैं चाहता तो इन्हें फिर से सम्पादित कर सकता था. लेकिन फिर इनमें वो भाव नहीं होता जो अब मौजूद है.

मुझे उम्मीद है आप इन सब गलतियों को भुलाकर कहानी की अंदरूनी तह को समझेंगे. आप के लिए ही तो लिखता हूँ. फिर आप नहीं पढेंगे तो कौन पढ़ेगा? शुक्रिया.

1. भागी हुई लडकी

सुबह का समय था. राजू सोया पड़ा था कि तभी किसी ने उसे झकझोर कर उठाया. राजू आँखे मलते हुए उठ गया. सामने मामी खड़ी थीं. मामी ने हांफते हुए कहा, “तुम्हे पता है रात छबीली घूरे के साले के साथ भाग गयी.” राजू ने आँखे मिचमिचा कर देखा कि कहीं वो सपना तो नही देख रहा है. राजू मामी से बोला, “किसने बताया आपको?”

मामी हैरत से बोली, “कौन बतायेगा? पूरे गाँव को पता चल गया.” राजू को बड़ा आश्चर्य हो रहा था. जब रात अपनी मौसी के देवर के साथ छत वाले कमरे में था तो छबीली घूरे के साले कलुआ के साथ इधर से उधर भाग रही थी. तब राजू ने सोचा था कि होगा कोई काम. क्योंकि गाँव में रामलीला चल रही थी. उसमे छबीली के पिता रावण का रोल करते थे और भाई मेघनाथ का

सारा घर रामलीला देख रहा था. इतने में छबीली कलुआ के साथ नौ दो ग्यारह हो गयी. लेकिन राजू के समझ में एक बात न आ रही थी कि छबीली ने कलुआ में ऐसा क्या देखा जो उसके साथ भाग गयी? क्योकि कलुआ का रंग तवे की कारोंच सा काला था. तभी तो नाम कलुआ पड़ा था. उसकी लम्बाई बांस की तरह लम्बी थी और उसी की तरह देह पतली. देखकर लगता था कि

कोई मरियल आदमी चला आ रहा है. दांत पीले रंग के और रात में तो कलुआ के सिर्फ पीले दांत ही दिखाई पड़ते थे.

जबकि छबीली गोरी चिट्टी. भरे बदन की थी. उसे देख कर कोई भी लड़का दिल दे बैठे. गोरे मुखड़े पर काली काली आँखें. गालों पे काला तिल. लम्बी नाक उसपर गोल नथुनी. सुनहरे सोने से बाल जो कमर को छूते थे. तो फिर छबीली कलुआ के साथ क्यों भागी. राजू को इस बात का सबसे ज्यादा दुःख था न कि भागी क्यों इस बात का.

राजू फटाफट बिस्तर से उठा और बाहर की गली में आया जिधर छबीली का घर था और थोड़े से आगे कलुआ के जीजा घूरे का घर था. जैसे हिंदुस्तान और पाकिस्तान का बार्डर और वैसी ही कुछ हालत थी वहां की.

कलुआ की बहन काली और छबीली की माँ रामजनी के बीच शब्दों के गोले दागे जा रहे थे. काली कह रही थी, “अपनी बेटी को संभालो तब मेरे भाई से कुछ कहना. जब लडकी दावत बाँटती फिरे तो लडके खावेंगे नही. बड़ी आयीं कलुआ को बदनाम करने वाली.”

इधर रामजनी का कहना था, “मेरी लडकी सीधी साधी है. उसे इस काले कलूटे कलुआ ने बहका दिया होगा. वरना इतनी संस्कारी लडकी भाग क्यों जाती.” राजू को रामजनी की बात में दम लगा. क्योंकि छबीली को देखकर नही लगता था कि ऐसा कुछ कर

डालेगी. लेकिन ये कहना कि सिर्फ कलुआ की सारी गलती है. ये सही नही था.

राजू तो पहले से ही गुस्सा था. ऊपर से छबीली रिश्ते में उसकी मौसी लगती थी. राजू को कलुआ पर ज्यादा गुस्सा थी इस कारण वह छबीली के घर वालों के गुट में जा मिला.

राजू ने छबीली के पिता को बताया कि रात मैंने छबीली मौसी को कलुआ के साथ छत पर इधर उधर भागते हुए देखा था. छबीली का बाप मलूका पहले तो राजू पर गुस्सा हुआ फिर बोला, "तू रात में नही बता सकता था. अगर रात में बता देता तो इतनी नौबत ही न आती. रात में ही उस कलुआ के बच्चे की टांगें तोड़ लंगड़ा बना देता."

राजू तनकर बोला, "मुझे क्या पता था कि छबीली मौसी ये धमाका कर जायेंगी वरना में ही कलुआ से दो दो हाथ कर डालता." राजू को पता था कि कलुआ उसको उल्टा पीट डालता लेकिन मलूका की नजरों में इज्जत पाने के लिए उसने ऐसा कहा था और ऐसा हुआ भी.

मलूका नर्म पडकर राजू से बोला, "अच्छा चल जो भी हुआ उसे छोड़ और ये बता कलुआ छबीली को लेकर कहाँ गया होगा. कुछ तो सुना होगा तूने." राजू ने सुन रखा था कि लड़का जब लडकी को भगा कर ले जाता है तो किसी होटल या अपने दोस्त के यहाँ जाता है. तो राजू ने तुक्का लगाते हुए कहा, "मैंने सुना था कि वो

किसी दोस्त के यहाँ जाने की बात कर रहा था.”

सारी पंचायत राजू की कायल हो गयी. क्योंकि उसने कलुआ का पता जो बता दिया था. लेकिन एक बात फिर आ लटकी कि कलुआ कौन से दोस्त के यहाँ गया होगा?. और दोस्त रहता कहाँ होगा?. अब राजू इस बात पर अपना तुक्का नहीं लगा सकता था. इस कारण वह चुप रहा. फिर लोगों ने सोचा कलुआ के एक दोस्त का पता चले तब सारे दोस्तों की खबर अपने आप लग जाएगी.

सब लोग गाड़ी में बैठ कलुआ के गाँव पहुंचे. वहां से कलुआ के एक दोस्त को पकड़ा. उसे दारू पिलाई. डराया धमकाया तब जाकर उसने जाकर उसने दोस्तों की डायरेक्टरी बता दी और घुमाने लगा दोस्तों के ठिकाने पर.

एक जगह जाकर कलुआ का पता चला. एक दोस्त के कमरे में कलुआ छुपा बैठा था. छबीली उसकी गोद में सर रखे लेटी थी. दोनों अपने अपने घर के लोगो की मनोदशा पर सोच के घोड़े दौड़ा रहे थे. छबीली कहती थी, “मेरी अम्मा तो मुझे सामने पाकर मेरे दो हिस्से कर डाले.” कलुआ कहता था, “मेरा जीजा मुझे देखे तो मेरा मुंह काले से लाल कर डाले.”

तभी दरवाजा बजा. दोनों बिजली के करेंट लगे आदमी की तरह उठ खड़े हो गये. बाहर से आवाज आई, “दरवाजा खोलो.” आवाज मलूका की थी. जिसे दोनों प्यार के पंक्षी अच्छे से समझ गये.

मलूका फिर बोला, “दरवाजा खोल दो नहीं तो तोड़ डालूँगा या कमरे को बाहर से बंद कर आग लगा दूंगा.” दोनों प्रेमियों के दिल काँप उठे और फिर तभी छबीली की आँखों में क्रोध की अग्नि जल उठी. उसने कलुआ के दोस्त का रखा देसी कट्टा निकाल लिया और कलुआ को अपने पीछे कर दरवाजा खोल दिया.

लोग कमरे में घुसने वाले ही थे कि छबीली को काली माता के रूप में देख दो दो कदम पीछे हट गये. ऊपर से उसके हाथ में देसी कट्टा भी था. छबीली कट्टा तान कर बोली, “सब के सब भाग जाओ नहीं तो जान से हाथ धो बैठोगे.”

लोगों ने ये बात सुनकर अपने कदम और पीछे खींच लिए. तभी छबीली का भाई गोबर आगे बढ़ा. उसने सोचा इज्जत जाने से अच्छा है जान चली जाय. इतना सोच छबीली के सामने जा खड़ा हुआ और बोला, “चला गोली. में भी तो देखूं फिर क्या होता है. एक गोली से ज्यादा तो नही होगी इस देसी कट्टे में. फिर तेरी जो हालत होगी उसका भी अंदाजा कर लेना.”

छबीली पर आज इश्क का भूत सवार था. उसने कट्टा का निशाना गोबर के सीने पर लगाया और ट्रिगर दबा दिया और जैसे ही ट्रिगर दबा लोगों ने आँखें बंद कर ली.

लेकिन ये क्या? कट्टा से गोली चली ही नही किन्तु डर के मारे गोबर की पेशाब पेंट में ही निकल पड़ी. गोली न चलने का कारण था कि कट्टे में गोली ही नही थी. अब तो छबीली के भी होश उड़

गये.

मलूका ने आगे बढ़ कर छबीली के बाल पकड़ लिए और कमरे से घसीटते हुए बाहर ले आया. कलुआ की हालत पतली हुई उसे वहीं पर दस्त छूट गये. गोबर और कलुआ की हालत एक जैसी थी दोनों शर्म के मारे सर न उठा सके. लेकिन गोबर का पक्ष आज ज्यादा मजबूत था तो उसने गुस्से में आ कलुआ के लातें बजा दी. कलुआ पहले से ही गन्दा हुआ खड़ा था. लोगों ने उसे छूने की हिम्मत न की बल्कि गोबर को समझाया कि मर गया तो केस हो जायेगा. लडकी मिल गयी चलो अपने घर.

सभी लोग छबीली को ले घर आ पहुंचे. छबीली को देख उसकी माँ रामजनी उसे चप्पल से पीटने लगी. मोहल्ले की औरतों ने जैसे तैसे छबीली को छुड़ाया. रामजनी तो कहतीं थी कि आज दरांती से इसके छोटे छोटे टुकड़े कर कुत्तों को खिला दे. लेकिन ऐसा करने की हिम्मत न हुई. आखिर उन्ही का तो खून था उसमें.

सब शांत हो जाने के बाद तय हुआ कि छबीली की शादी तुरंत येंन केन प्रकारेण कर दी जाय. सारे रिश्तेदारों को खबर कर दी गयी. लेकिन मुसीबत कहाँ थमने वाली थी. कोई भी अच्छा लड़का उससे शादी करने को तैयार न होता था.

लेकिन तभी एक रिश्तेदार ने खबर दी कि उनके मोहल्ले में एक लड़का है जो छबीली से शादी कर सकता है. एक दूसरे की

देखाभारी हुई. रिश्ता पक्का हो गया. लेकिन लड़का मोटा था. साथ ही छबीली से ज्यादा उम्र का था किन्तु शादी तो करनी ही थी. दामन पर लगा दाग जो छुड़ाना था. किसी तरह लडकी के हाथ पीले जो करने थे. छबीली से एक भी बार ये न पूछा गया कि लड़का तुम्हें पसंद है या नहीं.

शादी हुई उस दिन मोहल्ले वाले लोगों को लड़के वालों के पास न फटकने दिया गया. इसलिए कि कोई बोल न दे कि लडकी भाग गयी थी. इस आफत से बचने के लिए सिखाये पढाये. चुस्त लडके लगाये गये. उनसे कहा गया कि मोहल्ले का कोई भी आदमी लडके वालों से बात न कर पाए.

बड़ी मुश्किल से रामराम कह छबीली की शादी की रस्में पूरी हुई. छबीली के बाप मलूका ने पंडित को दो चार बार झिडक दिया. बोला, “एकाध मंतर भूल जाओगे तो आफत न आ जाएगी.” पंडित मलूका से बोला, “मैं तो भूल जाऊं पर सामने लडके पक्ष का पंडित नहीं भूलेगा. उसका क्या करु.”

छबीली चुपचाप मंडप में बैठी रही. उसे शादी में आनंद न आ रहा था. उसकी आँखे तो सिर्फ कलुआ की सूरत देखना चाहती थी. लेकिन जो वर छबीली के बगल में बैठा था वो छबीली को देख फूला न समा रहा था.

शादी निपट चुकी थी. छबीली बिदा होने को हुई. माँ रामजनी का दिल भर आया. दोनों माँ बेटी लिपट कर खूब रोयीं. माँ

रामजनी ने कसम दी और बोली, “बेटी अब जैसा भी है वो मंजूर करो. पुरानी बातें गलती समझ भुला डालो. शायद तुम्हारी शादी अच्छी जगह करते लेकिन तुम्हे जमाने का हाल तो पता ही है. हम मजबूर है हमें माफ़ करना. अब किसी को शिकायत का मौका न देना.”

छबीली भी माँ के गले मिल कर रो रही थी. बोली, “माँ तुम्हें कभी दुःख न दूंगी. अब ससुराल से केवल मर के ही बापिस आउंगी. तुम मेरी चिंता भूल जाओ और मेरा कहा सुना भी माफ़ करना.” सारे मन के दाग धुल चुके थे. राजू की आँखे भी नम थी. सोचता था कि प्यार इंसान को कितना सुधार देता है और बिगाड़ भी सकता है. छबीली के बाप मलूका की आँखे भी बेटी को विदा होते देख नम थी.

उसके बाद छबीली अपनी ससुराल चली गयी. कलुआ फिर कभी उस गाँव में नही आया. छबीली भी शायद उसे भूलती जा रही थी. आज वह एक बच्चे की माँ थी. आज सब कुछ शांत सा था. जैसे कुछ हुआ ही न हो. लेकिन इतिहास की कई परतें कई कहानियाँ लिए मौजूद है. लेकिन उन्हें कुरेदे कौन? सब अपने में व्यस्त है. परन्तु राजू के दिमाग में यह अभी भी वैसा ही है. जैसा तब था.

***

2. खुजली की दवा

कस्बे के सबसे लोभी आदमियों में कल्लू की गिनती होती थी. लोग उन्हें कल्लू मामा कहकर पुकारा करते थे. यह बात तब की है जब कल्लू मामा के खाज खुजली हुई थी. शुरुआत में खुजली बहुत थोड़ी सी थी लेकिन धीरे धीरे यह पूरे शरीर पर फैल गयी. कल्लू मामा नित नये नये इलाज कम घरेलू नुस्खे अपनाते फिरते किन्तु कोई फायदा न हुआ.

कल्लू मामा जी से खुजली इलायची मामी के लग गयी अब तो मामी जी ने आफत खड़ी कर दी. बोली, "हफ्ते भर में अगर खुजली ठीक न करायी तो घर में न घुसने दूंगी." कल्लू मामा तुनककर बोले, "अरे ये भी कोई बात हुई. ये खुजली है कोई भागवत का पाठ नही जो हफ्ते भर में खत्म हो जाय. और ये मैंने जानबूझ कर तो नही की जो मुझे घर में न घुसने दोगी?"

इतना कह मामा जी खुजली ठीक करने का कोई सस्ता उपाय ढूढने लगे. उन्हें किसी ने बताया कि गो मूत्र लगाओ भयकर से भयंकर खुजली का सफाया हो जाता है. कल्लू मामा को ये उपाय जम गया. क्योंकि मुफ्त का रामवाण इलाज था. लेकिन उसमे शर्त यह थी कि गो मूत्र ताजा होना चाहिए.

कल्लू मामा ने सोचा ये कौन सी बड़ी बात है. और चल दिए

ताजा गो मूत्र लेने. हाथ में लोटा था और सर पर गमछा. जाकर एक पडोस के गाय भैस के बाड़े में घुस गये. वहां पर एक काली गाय बंधी हुई थी. कल्लू मामा ने सोचा चलो ये सही रहा. काली गाय का मूत्र तो और ज्यादा कारगर होता है.

कल्लू मामा ने गाय के हाथ जोड़े और प्रार्थना की, “हे गऊ माता. थोडा जल्दी करना मुझे ताजा गो मूत्र ले जाना है.” गाय ने सर हिलाया सोचा शायद कुछ खाने के लिए लाया होगा. लेकिन कल्लू मामा ने उस बात का दूसरा मतलब निकला. वे सोचने लगे गाय ने मेरी प्रार्थना सुन ली.

थोड़ी देर बैठने के बाद कल्लू मामा ने देखा कि गाय ने पूंछ उठाई है. उनमे बिजली का करंट दौड़ गया. उठकर गाय के पीछे पहुंचे और लोटा लगा दिया. लेकिन ये क्या गाय ने मूत्र की जगह गोबर का त्याग कर दिया. कल्लू मामा का लोटा गोबर से भर गया.

कल्लू मामा ने सोचा चलो अभी गोबर किया है. अब मूत्र भी करेगी. यह सोच वे सरकारी नल पर अपना गोबर से सना लोटा धोने चले गये. लौटकर आये तो देखा कि गाय अपने मूत्र का त्याग कर चुकी है. कल्लू मामा का दिमाग सनक गया लेकिन क्या कर सकते थे. अब गाय को अपना मूत्र त्याग करने के लिए कल्लू मामा की इजाजत थोड़े ही न लेनी पड़ेगी. वो तो अपने मन से यह सब करेगी.

कल्लू मामा अपने धैर्य को इकट्ठा कर फिर से अपनी पोजीसन ले बैठ गये. उनकी आँखे गाय पर थीं कि कब वह पूंछ उठाये और कब वे लौटा लगायें. लेकिन गाय को किसी का इन्तजार न था.

थोड़ी देर बाद अचानक गाय ने अपनी पूंछ उठाई. कल्लू मामा को फिर करंट लग गया. वो पलक झपकते ही लौटा ले गाय के पीछे पहुंच गये. गाय ने थोडा मूत्र त्यागा ही था कि कल्लू मामा को देख रुक गयी.

कल्लू मामा भी पशुओ के थोड़े जानकार थे समझ गये ये मेरी वजह से रुक गयी है. उन्होंने लौटा गाय के ठीक पीछे उस जगह पर रखा जहाँ मूत्र की धार आनी थी और खुद दूर आकर खड़े हो गये.

लेकिन ये तो कमाल हो गया. गाय के मूत्र से लौटा भर गया. कल्लू मामा की बांछे खिल गयी. सोचा चलो ये ठीक हुआ. लेकिन जैसे ही आगे बढ़कर लौटा उठाने को झुके. तभी उस काली गाय ने कल्लू मामा के मुंह पर खींच कर ऐसी लात दी कि कल्लू मामा बिलबिला कर वही गिर पड़े. गौमूत्र का लौटा भी पूरा फैल गया.

कल्लू मामा जब नीचे गिरे तो पूरा बदन गोबर और गौमूत्र में सन गया. जैसे तैसे उठकर घर आये. दो दिन कल्लू मामा की सिकाई चली. तभी एक बुढिया ने आकर बताया कि चोट पर गौमूत्र लगाने से चोट जल्दी ठीक हो जाती है. जाकर थोडा गो मूत्र ले आओ आज ही ठीक हो जाओंगे.

कल्लू मामा चिढ कर उस बुढिया से बोले, “अम्मा मेरे सामने गौमूत्र का तो नाम ही न लो. ये जो मेरी दो दिन से सिकाई हो रही है वो गो मूत्र का ही वरदान है.” इतना सुन बुढिया सिटपिटा गयी.

कल्लू मामा जैसे ही ठीक हुए वैसे ही खाज खुजली की दवाई फिर से शुरू कर दी लेकिन विना जोखिम वाली. किसी मसखरे बुड्ढे ने उन्हें बता दिया कि तुम नया मोमीलाल(मोबिओइल) लगा लो. दो दिन में खुजली की अम्मा मर जायेगी. चूँकि किसी बुजुर्ग ने उन्हें उपाय बताया था और किफायती भी था तो उन्होंने उसे आजमाने का मन बनाया. उन्हें क्या पता था कि बुड्ढे ने उनके साथ मजाक किया है.

कल्लू मामा साईकिल ले कर बाज़ार गये और ताजा मोबिओइल ले आये. जो गाड़ी के इंजिन में डाला जाता है. ऑइल लेकर मामा जी घर आये और आयल को एक कटोरे में पलट लिया. अपने सारे कपड़े उतारे (केवल निक्कर पहने रहे) फिर सारे शरीर पर ओयल मलने लगे. इतने में इलायची मामी भी आ गयी. बोली, “ये क्या लगा रहे हो?”

मामा जी बड़े जोश में बोले, “दवा लगा रहा हूं. ऐसी दवा जो खुजली की अम्मा को भी मार डाले.” थोड़ी बहुत खुजली मामी इलाइची के भी थी वे बोली, “अच्छा लाओ थोडा मैं भी लगा लूँ.” कल्लू मामा इलायची मामी को ऑइल देते हुए बोले, “अर्जेंट दवा

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below